Vol. 1, Issue . 1 / February 2011, pp.59-61

Research Paper - Hindi

नाटककार विभुकुमार:एक परिचय

— प्रा. बिराजदार गंगाधर धुळप्पा
हिंदी विभाग प्रमुख,
डी.बी. एफ.दयानंद महाविद्यालय, सोलापूर .

नाटक साहित्य की अन्य विधाओं से विशिष्ट विधा है और सामाजिक जीवन की प्रतिलिप है! मंचीय उपकरणों से जीवनानुभूतियों को साक्षात कराने की क्षमता के कारण नाटक में जीवनानुभवों का प्रतिफलन विशेष प्रभावशाली रूप में हो सकता है!

साठोत्तर हिंदी के प्रयोगशील नाटकारों में विभुकुमार जी का नाम महत्वपूर्ण है! वे सफल नाटककार, कुशल कहानीकार भी हैं! सन् 1981 में 'तालों में बंद प्रजातंत्र ' के माध्यम से विभुकुमार जी का नाट्य –लेखन के क्षेत्र में पदार्पण हुआ! उन्होंने सन् 1981 से लेकर सन् 1994 तक पॉच नाटक लिखकर हिंदी नाट्य साहित्य को समृध्द किया है!

विभुकुमार जी सामाजिक चेतना के प्रति जागरूक है! यही कारण है कि उनके साहित्य में हमें कई स्थानों पर समाज और परिवेश के प्रति चिंतन दिखाई देता है! साथ ही आजादी के बाद राजनीति ने सामान्य व्यक्ति की जो दुर्दशा की है, उसे देखकर उनका मन पसीज उठता है!

विभुकुमार जी साठोत्तर काल के नाटककार हैं! अतः उनके नाटकों के समग्र अध्ययन की दृष्टि से पृष्ठभूमि के रूप में स्वातंत्र्योत्तरकालीन हिंदी नाटक का संक्षिप्त विवेचन उचित प्रतीत होता है!

साठोत्तर हिंदी नाटक समसामयिक परिवेश की संवेदनीयता का नाटक है! साठोत्तरकालीन स्थितियों से प्रभावित होकर साठोत्तर नाटककारों ने बडी सचाई और ईमानदारी के साथ स्थितियों की विसंगतियों और उसके यथार्थ रूप को प्रखर अभिव्यक्ति प्रदान की है! स्वतंत्रता प्राप्ति के एक दशक बाद अर्थात् सन् 1960 के बाद हिंदी नाटक ने युगजीवन की अभिव्यक्ति के लिए लीक से हटकर एक नया मार्ग ग्रहण किया! इसीलिए साठोत्तर नाटक को 'नए नाटक ' के नाम जाना जाता है

साठोत्तर हिंदी नाटक ने समसामायिक जीवन के विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक, परिवारिक, शैक्षिक विसंगतियों को कथ्य बनाया है नाटक के कथ्य को अधिक सहज रूप में लोगों तक पहुॅचाने के लिए विभिन्न युक्तियों और शैलियों का प्रयोग किया है!

विभुकुमार जी ने जिस समय नाटक के क्षेत्र में पदार्पण किया, उस समय अधिकतर नाटक आम आदमी की पहुॅच , उनकी बौध्दिकता से दूर पश्चिमी रूप– शिल्प के साथ ही आधुनिक महानगरीय बोध में उलझा हुआ था!जिससे हिंदी नाटक आम जनता और उसकी समस्याओं से कटकर खास मध्यमवर्गीय तिलस्म में कैद होता नजर आ रहा था! ऐसे समय में विभुकुमार जी ने आम आदमी की पीडा को आम आदमी की जबान में आम आदमी तक पहुॅचाने के उद्देश्य को सामने रखकर अपने नाटकों में आम आदमी से संबंधित विषयवस्तु को अपनाकर सहज, सरल शिल्प का प्रयोग किया और समसामयिक नाटककारों से हटकर कुछ अलग देना चाहा! इस प्रकार विभुकुमार जी ने अपने समकालीन नाट्य –साहित्य को गहराई से देखकर युग की आवश्यकतानुसार नाटक लिखे!

विभुकुमार जी के 'तालों में बंद प्रजातंत्र ', 'अपरिभाषित', 'हवाओं का विद्रोह', 'मुन्नीबाई ' नाटकों मे ं सम–सामयिक जीवन से संबंधित जो विभिन्न संदर्भ आए है, वे सभी संदर्भ साठोत्तर युग की सामाजिक, राजनीतिक, पारिवारिक, शैक्षिक परिस्थितीयों पर हुई। विभुकुमार जी की प्रतिक्रिया के रूप में देखे जा सकते हैं! अतः समसामयिक संदर्भो के अंतर्गत स्वातंत्र्योंत्तर भारतीय परिवेश और परिवेशगत विसंगतियॉ विभुकुमार जी के नाटकों के कथ्य का एक महत्वपूर्ण पक्ष है, जिनके पीछे विभुकुमार जी का व्यक्तित्व, जीवन दृष्टि और चिंतनधारा जुडी हुई है!

विभुकुमार जी वर्तमान समाज की त्रासद और निराशाजनक स्थितीयों को केवल प्रस्तुत ही नहीं करते बल्कि इन त्रासद, निराशाजनक स्थितीयों को बदलकर समाज– जागरण और समाज परिवर्तन के लिए प्रेरणा भी देते हैं!

संक्षेप में विभुकुमार जी के पॉचो ंनाटकों का कथ्य नाटककार की सामाजिक चेतना, विद्रोह का प्रखरता के साथ ही मानवीयता और समाज– सुधार की अदम्य कामना की ओर सकेत करता है! दलित, शोषित , उपेक्षित, बेसहारा वर्ग की आवाज को महत्ता देकर घोर निराशाजनक त्रासद स्थितियों के बीच ये नाटक आस्था का आकाशदीप जलाए हैं!

कथावस्तु के स्तर पर विभुकुमार जी के नाटक समसामयिक यथार्थ से सीधा साक्षात्कार कराते हैं! 'तालों मे बंद प्रजातंत्र ' नाटक आज की लगभग समूची कुत्सित राजनीति का चित्र हमारे सामने प्रस्तुत करता है! इसमें नाटककार ने यह दिखाया है कि राजनीति के छल–प्रपंच से प्रजातंत्र को किस तरह निजी संपत्ति की तरह तालों में बंद रखने की कोशिश राजनीतिज्ञ किया करते हैं! 'अपरिभाषित ' नाटक में नाटककार ने आम–आदमी को खोजने की, परिभाषित करने की कोशिश की है! 'कहे ईसा सुने मूसा ' नाटक आज की राजनीतिक वास्तविकताओं को उजागर करता है! वह देश की नब्ज टटोलता है ता`'हवाओं का विद्रोह ' नाटक सरकार द्वारा आदिवासियों को शिक्षित बनाने के प्रयासों की विफलता उजागर करता है और 'मुन्नीबाई 'नाटक मुन्नीबाई (वेश्या) की व्यथा, समाज, शासन, राजनीति आदि अनेक मोडों से गुजरता हुआ हमारी संपूर्ण व्यवस्था पर करारी चोट करता है!

विभुकुमार जी के अधिकतर नाटकों में कोई स्थूल, क्रमबध्द कथा नहीं है, बल्कि स्थिती विशेष के दृश्य चित्र है उनके नाटकों की कथावस्तु दृश्यों में उभरकर .त्रासद स्थितीयों का साक्षात्कार कराती हैं!

शिल्प की दृष्टि से विभुकुमार जी के नाटकों मे कई नाट्यसूत्रों का समन्वय मिलता हैं! आज का विकसित मंच भी उनके साथ जुडा हुआ है! उनके नाटकों के पात्र आज की बदली हुई मानसिकता के परिचायक हैं!

कथावस्तु की संरचना में सूत्रधार का महत्वपूर्ण स्थान हैं! कथावस्तु की संरचना की संरचना में गीत, गझल, विज्ञप्ति आदि का प्रयोग भी विशेष महत्वपूर्ण बन गया है!

विभुकुमार जी ने अपने नाटकों में अनाम पात्रों की सृष्टि की है! उनके नाटकों के पात्र और चरित्र–सृष्टि का सामर्थ्य उनकी यथार्थता में है! विभुकुमार जी के अधिकतर नाटक चरित्रप्रधान नहीं हैं, बल्कि उनमें चरित्रों के बदले त्रासद, विसंगत, विद्रुप स्थितीयों को अधिक महत्व दिया गया है! त्रासद स्थितियों के साक्षात्कार के लिए उनके नाटकों में चरित्र साधन बनकर आए है! समग्र रूप में विभुकुमार जी के नाटकों के पात्र हमारे सामने एक दर्पण प्रस्तुत करते हैं और हमें अपने आप से, अपने परिवेश से परिचित कराते हैं!

विभुकुमार जी के नाटक मूलतः आम जनता के लिखे गए नाटक हैं! अतः उनके पॉचों नाटकों में भाषा की कारीगरी, शब्दों के घटाटोप पांडित्य, अलंकरण और विचारों की बोझिलता नही है! भाषा सहज, चलती, व्यावहारिक है! उन्होंने अपने नाटकों में व्यंग का भी प्रयोग किया है! व्यंगात्मक भाषा का यह रूपही तीखा प्रहार करता है, तो कहीं करूणा, तिलमिलाहट पैदा करता है तो कहीं व्यंग में भी हास्य निर्माण करता हैं! पात्र के व्यक्तित्व , स्तर, मानसिकता के साथ ही भावानुकूल भाषा के प्रयोग पर भी विशेष ध्यान दिया है!

पॉचो नाटकों में अधिकतर संवाद छोटे, सहज, आकर्षक और प्रवाहपूर्ण हैं! साथ ही प्रतीकात्मकता से रोचक हो गए हैं! संवादो में अभिनय की प्रचुर संभावनाएॅ हैं! सीधे–सहज स्तर से संवाद दर्शकों को आत्कृष्ट करते हैं!

एक को नाटकों को छोडकर अन्य नाटकों में एक –सी स्थितीयों की प्रधानता के कारण भाषा और संवाद में कही – कहीं एकसरता, सपाटपन, दुहराव–सा आ गया है! फिर भी संप्रेषण की सहजता विभुकुमार जी के नाटकों की भाषा और संवादो की मुख्य विशेषता हैं!

विभुकुमार जी के नाटकों की यह विशेषता है कि वे निर्देशक की कल्पनाशीलता को पूरा अवसर देते हैं! निर्देशक की प्रतिभा के बलपर ये नाटक अलग–अलग तरह से सफलता से मंचित भी हो चुके हैं!

संपूर्ण अध्ययन के उपरांत यह तथ्य सामने आता है कि विभुकुमार जी के नाटकों के अधिकतर संदर्भ नकारात्मक हैं! मात्र कहीं – कहीं समाधान व्यक्त किया हैं कही –कहीं गहराई से उनपर विचार किया है और कुछ संदर्भो पर मात्र प्रकाश डालना ही अभीष्ट समझा हैं!